पक्षपात को ही प्रमाणित करती है। सच बात तो यह है कि श्रम क्रय-विक्रय होता है। अतः उसका एक बाजार होता है। श्रम क्रय-विक्रय की विधियों का अध्ययन श्रम समस्याओं के सुलझाने में मूल्यवान सहायता दे सकता है। "श्रम बाजार" शब्द का प्रयोग द्वितीय महायुद्ध में प्रचलित हुआ। आजकल यह शब्द सामान्य हो गया है।

श्रम की माँग व पूर्ति
Demand and Supply of Labour

श्रम बाजार में हमने यह अध्ययन किया कि श्रम बाजार में उद्योगपति श्रम का क्रेता होता है और श्रमिक श्रम का विक्रेता होता है। इस प्रकार श्रम बाजार के दो निम्नलिखित महत्वपूर्ण अंग हैं

(i) श्रम की माँग (Demand for Labour)
(ii) श्रम की पूर्ति (Supply of Labour)

(i) श्रम की माँग (Demand for Labour) :-
आर्थिक विश्लेषण में मजदूरी श्रम की कीमत है। इसलिए किसी दूसरी वस्तु की कीमत की तरह इसका निर्धारण भी माँग तथा पूर्ति की शक्तियों के द्वारा होता है। मजदूरी श्रम की कीमत है, परन्तु और इस पर कोई नियंत्रण नहीं होने पर दूसरी कीमतों की भाँति इसका निर्धारण पूर्ति एवं माँग के द्वारा होता है।

श्रमिकों की माँग के सम्बन्ध में अवधारणाएँ हैं (a) हर औद्योगिक बाजार में काम पर लगे श्रमिकों की संख्या के रूप में माँग की अवधारणा और (b) आर्थिक सिद्धान्तों से निकली हुई वह अवधारणा जो वस्तुओं के लिए कीमत-मात्रा फलन (Price Quantity Function) की भाँति एक कीमत रोजगार फलन (Price Employment Function) बतलाती है।

द्वितीय अवधारणा के अनुसार यह